नं. 1

संजीव®

बुक्स

चित्रकला-XII

भारतीय कला का परिचय : भाग-2

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2025 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2026

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 340/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 340.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

  मेगा ग्राफिक्स, जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  ★★★★★★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

1. पाण्डुलिपि चित्रकला की परम्परा 1–14
(The Manuscript Painting Tradition)
2. राजस्थानी चित्रकला शैली 15–69
(The Rajasthani Schools of Painting)
3. मुगलकालीन लघु चित्रकला 70–110
(The Mughal School of Miniature Painting)
4. दक्कनी चित्रकला शैली 111–141
(The Deccani Schools of Painting)
5. पहाड़ी चित्रकला शैली 142–180
(The Pahari Schools of Painting)
6. बंगाल स्कूल और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद 181–216
(The Bengal School and Cultural Nationalism)
7. आधुनिक भारतीय कला 217–262
(The Modern Indian Art)
8. भारत की जीवन्त कला परम्पराएँ 263–288
(The Living Art Traditions of India)

◆◆◆

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025

चित्रकला

(DRAWING)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 24**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

General Instructions to the Examinees :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
   Candidate must write first his/her Roll No. on the question paper compulsorily.
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
   All the questions are compulsory.
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
   Write the answer to each question in the given answer-book only.
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
   For questions having more than one part, the answers to those parts are to be written together in continuity.
5. प्रश्न-पत्र के हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर में किसी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही मानें।
   If there is any error/difference/contradiction in Hindi & English versions of the question paper, the question of Hindi version should be treated valid.
6. प्रश्न संख्या 12 से 15 में आन्तरिक विकल्प हैं।
   There are Internal choice in Q. No. 12 to 15.
7. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
   Write down the serial number of the question before attempting it.

खण्ड-अ (Section-A)

1. नीचे दिये गये बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कर उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :
   Write the correct answer to the given multiple choice questions in the answer booklet :

   (i) जैन धर्म से संबंधित ग्रन्थ है— [$^1/_2$]

   (अ) कल्पसूत्र (ब) रामायण
   (स) महाभारत (द) नल दमयन्ती

   It is text related to Jainism—

   (A) Kalpasutra (B) Ramayan
   (C) Mahabharat (D) Nal Damyanti

   (ii) संग्राहिणी सूत्र किससे संबंधित है? [$^1/_2$]

   (अ) धार्मिक क्रिया (ब) रक्त संबंधी
   (स) परिवार संबंधी (द) ब्रह्माण्ड संबंधी

   The Sangrahini sutra related to?

   (A) Religious Rituals (B) Blood Related
   (C) Family Related (D) Cosmological

(iii) 'ढोला मारू' कृति किस शैली से संबंधित है? [1/2]

(अ) पहाड़ी शैली (ब) जोधपुर शैली
(स) कम्पनी शैली (द) दक्कनी शैली

'Dhola Maru'–Painting belongs to which school (style)?

(A) Pahari School (B) Jodhpur School
(C) Company School (D) Deccani School

(iv) 'मैडोना एण्ड चाइल्ड' कृति किसने बनाई थी? [1/2]

(अ) किशोर कुमार (ब) राजा रवि वर्मा
(स) बसावन (द) निहाल चन्द

Who painted the painting–'Madonna and Child'?

(A) Kishor Kumar (B) Raja Ravi Varma
(C) Basawan (D) Nihal Chand

(v) लॉस एंजिल्स काउंटी कला संग्रहालय कहाँ पर स्थित है? [1/2]

(अ) लन्दन (ब) फ्रान्स
(स) जर्मनी (द) संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.ए.)

Where is the Los Angles county museum of art located?

(A) London (B) France
(C) Germany (D) United States of America (USA)

(vi) 'कम्पनी शैली' क्या है? [1/2]

(अ) भारतीय और यूरोपीय कला का मिश्रण (ब) जापानी कला
(स) रूसी कला (द) चीनी कला

What is company school?

(A) Fusion of Indian and European Art (B) Japani Art
(C) Russian Art (D) Chinies Art

(vii) 'फड़' किस राज्य से संबंधित है? [1/2]

(अ) बिहार (ब) महाराष्ट्र
(स) पंजाब (द) राजस्थान

'Phad' belongs to which state?

(A) Bihar (B) Maharashtra
(C) Punjab (D) Rajasthan

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

Fill in the blanks in the following sentences :

(i) 'प्रज्ञापारामिता' .... नई दिल्ली में संग्रहित है। [1/2]

'Prajnaparamita' is Preserved (Collected) in .... New Delhi.

(ii) .... और .... फारसी चित्रकार थे। [1/2]

.... and .... were Persian painters.

(iii) राजा .... के संरक्षण में काँगड़ा शैली पल्लवित हुई। [1/2]

The Kangra school (style) flourished under the patronage of Raja ....

(iv) प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप ऑफ बोम्बे में .... और .... कलाकार शामिल थे। [1/2]

The Progressive artists Group of Bombay included artists like .... and ....

(v) बिहजाद .... शैली का मुख्य चित्रकार था। [1/2]

Bihjad was the main painters of the .... school (style).

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए :

Answer the following very short type questions in **one** line :

(i) 'उत्तराध्यन सूत्र' में क्या वर्णित है? [1/2]
What is described in 'Uttaradhyana Sutra'?

(ii) छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय कहाँ पर स्थित है? [1/2]
Where is Chhatrapati Shivaji Maharaj Vastu Museum located?

(iii) 'रसिकप्रिया' की रचना किसने की थी? [1/2]
Who wrote 'Rasikapriya'?

(iv) 'रामायण का युद्धकाण्ड' कृति किसने चित्रित की थी? [1/2]
Who painted the painting – 'Yuddha Kand of Ramayan'?

(v) 'राम अपनी सम्पत्ति दान करते हुए' कृति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [1/2]
Write a short note on the painting–'Rama gives away his possessions'.

(vi) विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय कहाँ पर स्थित है? [1/2]
Where is the Victoria and Albert Museum located?

(vii) एन. सी. मेहता क्यों प्रसिद्ध हैं? [1/2]
Why is N.C. Mehta famous?

(viii) 'शाँति निकेतन' की स्थापना किसने की थी? [1/2]
Who established 'Shanti Niketan'?

(ix) अमृता शेरगिल की कृति – 'ऊँट' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [1/2]
Write a short note on the Amrita Shergil's painting–'Camel'.

(x) पुरी, उड़ीसा की विख्यात लोक कला के बारे में संक्षेप में लिखिए। [1/2]
Write briefly about the famous folk art of Puri, Urissa (Odisha).

खण्ड-ब (Section-B)

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following short questions in maximum **40** words :

4. 'मुहम्मद कुली कुतुबशाह के सामने नृत्य प्रस्तुतीकरण' कृति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [3/4]
Write a short note on the painting–'Dancing infront of Muhammad Quli Qutub Shah'.

5. बीजापुर की 'योगिनी' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [3/4]
Write a short note on the 'Yogini' of Bijapur.

6. 'कम्पनी शैली' से आप क्या समझते हैं? [3/4]
What do you understand by 'Company school'?

7. गगनेन्द्रनाथ टैगोर की कृति – 'सिटी इन द नाइट' पर प्रकाश डालिए। [3/4]
Highlight the Gagnendranath Tagore's painting – 'City in the Night'.

8. 'ऑफ वाल्स' कृति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [3/4]
Write a short note on the painting – 'OF WALLS'.

9. 'ट्राइम्फ ऑफ लेबर' मूर्ति के बारे में आप क्या जानते हैं? [3/4]
What do you know about the sculpture – 'TRIUMPH OF LABOUR'?

10. 'मिथिला कला' के बारे में संक्षेप में लिखिए। [$^3/_4$]

Write in briefly about the 'Mithila Art'.

11. 'मृण्मूर्ति' क्या है? [$^3/_4$]

What is 'Terracotta'?

खण्ड-स (Section-C)

निम्नलिखित दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following long answer type questions approx. in **150** words :

12. अकबर कालीन मुगल कला के बारे में विस्तार से लिखिए। [$1^1/_2$]

Write in detail about the Akbar's period Mughal art.

अथवा/OR

मुगल कालीन चित्रकला के रंग और तकनीक के बारे में लिखिए।

Write about the colours and technique of Mughal school of painting.

13. 'सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय हॉकिंग' कृति के कलात्मक गुणों के बारे में लिखिए। [$1^1/_2$]

Write the artistic merits of the painting, – 'Sultan Ibrahim Adil Shah Second Hawking'.

अथवा/OR

'राग हिन्डोला की रागिनी पथमासिका' से आप क्या समझते हैं?

What do you understand by 'RAGINI PATHMASIKA OF RAGA HINDOLA'?

खण्ड-द (Section-D)

निम्नलिखित निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए :

Write the answer of the following essay type questions approx. in **250** words :

14. मालवा चित्रकला शैली के विविध पक्षों के बारे में विस्तार से लिखिए। [2]

Write in detail about various aspects of Malwa painting school (Style).

अथवा/OR

बीकानेर चित्रकला शैली के विविध पक्षों के बारे में विस्तार से लिखिए।

Write in detail about various aspects of Bikaner painting school (style).

15. रामकिंकर बैज की कला की विस्तृत व्याख्या कीजिए। [2]

Describe in detail the art of Ramkinker Baij.

अथवा/OR

'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप ऑफ बोम्बे' के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

Highlight the Importance of 'Progressive Artists Group of Bombay'.

❑❑❑

चित्रकला–कक्षा 12

1. पांडुलिपि चित्रकला की परम्परा
(The Manuscript Painting Tradition)

पाठ परिचय

विष्णुधर्मोत्तर पुराण का 'चित्रसूत्र' अध्याय भारतीय चित्रकला का स्रोत–

पाँचवीं शताब्दी में रचित 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' के तृतीय खण्ड में चित्रसूत्र नामक एक अध्याय है, जिसे सामान्यत: भारतीय कला और विशेषत: चित्रकला की स्रोत पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह अध्याय आकृति बनाने की कला से संबंधित है जिसे 'प्रतिमा लक्षण' कहते हैं, जो कि चित्रकला के धर्मसूत्र हैं। इसमें मानव आकृति की त्रि-आयामिता (विस्तार, लम्बाई, चौड़ाई) की संरचना, परिप्रेक्ष्य, तकनीक, उपकरण, सामग्री, सतह (दीवार) तथा धारणा का उल्लेख किया गया है। यह चित्रण के विभिन्न अंगों, जैसे–रूपभेद (roopbheda) या बाहरी स्वरूप, प्रमाण या परिमाप; अनुपात और संरचना; भाव या अभिव्यंजना; लावण्य योजना या सौन्दर्य रचना; सादृश्यता या समरूपता और वर्णिकाभंग या ब्रुश और रंगों के उपयोग की बहुत विस्तार से उदाहरणों सहित व्याख्या करता है। इनमें प्रत्येक के अनेक उप खण्ड हैं। कई शताब्दियों से इन धर्मसूत्रों को कलाकारों द्वारा पढ़ा, समझा और अनुसरण किया जाता रहा है। इस प्रकार से यह भारत में चित्रकला की सभी भारतीय शैलियों एवं चित्रशालाओं का आधार बना रहा है।

लघु चित्रकारी–

मध्यकाल की चित्रकला को उनके अपेक्षाकृत छोटे आकार के कारण लघु चित्रकारी के नाम से जाना गया। अपने छोटे आकार के कारण इन लघु चित्रों को हाथ में लेकर निकट से अवलोकन किया जाता था। कला संरक्षकों के महलों या राजदरबारों की दीवारों को भित्ति चित्रों से सजाया जाता था। इसलिए इन लघु चित्रों का उद्देश्य कभी भी दीवारों पर प्रदर्शित करना नहीं होता था।

पांडुलिपि चित्रकला–

चित्रकला का एक बड़ा वर्ग पांडुलिपि चित्रण के नाम से जाना जाता है जिनमें महाकाव्यों के काव्य छंदों और विभिन्न विहित, साहित्यिक, संगीत ग्रंथों (पांडुलिपियों) का चित्रण किया गया है। चित्रपट के शीर्ष भाग पर हस्तलिखित छंद को स्पष्ट रूप से सीमांकित आयताकार स्थानों में लिखा जाता था। कभी-कभी विषयवस्तु को लेखचित्र के मुख्य पृष्ठ पर न लिखकर पीछे की तरफ लिखा जाता था।

पांडुलिपि चित्रण को व्यवस्थित रूप से विषयवस्तु के अनुसार विभिन्न भागों में रचित किया गया था (प्रत्येक समूह में विभिन्न प्रकार के बंधनमुक्त कई चित्र या ग्रन्थ समाहित होते थे)। चित्र के प्रत्येक पृष्ठ का अपना एक संगत मूल-पाठ (Text) है जिसे या तो चित्र के ऊपरी हिस्से में सीमांकित स्थान पर या इसके पृष्ठ में उकेरा गया था। इस प्रकार से प्रत्येक समूह में रामायण या भागवत पुराण, या महाभारत, या गीत गोविन्द, रागमाला इत्यादि के चित्रों का संकलन होगा। प्रत्येक समूह को कपड़े के एक टुकड़े में लपेटकर राजा या संरक्षक के पुस्तकालय में एक पोटली के रूप में संग्रहित किया जाता था।

कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ (Colophon Page)–

संग्रह का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्ण-पृष्ठ कॉलफॅन (पुष्पिका) का पृष्ठ होता है, जिस पर संरक्षक के नाम की जानकारी, कलाकार या लेखक, संगठन या कार्य के पूर्ण होने की तिथि और संग्रह बनाने का स्थान एवं अन्य महत्त्वपूर्ण विवरण लिखा जाता था।

यद्यपि समय के प्रकोपों के कारण कॉलफॅन (पुष्पिका) पृष्ठ प्राय: गुम या नष्ट हो गए हैं और अपने उद्यम या संगठन के कहने पर कला-विद्वानों ने इनका विवरण इनकी विशेषता के आधार पर किया है।

चित्रकला किसी भी तरह की आपदाओं, जैसे–आग, नमी और अन्य आपदाओं के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। फलत: लघु चित्रों को कला का बहुमूल्य एवं कीमती रूप माना गया है एवं इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना भी सुगम था। इन चित्रों को प्राय: राजकुमारियों को उनके विवाह के समय भेंट के रूप में उपहार में दिया जाता था। इनका राजाओं एवं दरबारियों के मध्य उपहार और कृतज्ञता के रूप में भी आदान-प्रदान बड़े व्यापक और व्यावहारिक रूप में किया जाता था और सुदूर स्थानों पर इनका व्यापार किया जाता था। ये चित्र तीर्थयात्रियों, साधु-सन्तों, साहसिक खोजकर्ता, व्यापारियों और पेशेवर कथावाचक के साथ सुदूरवर्ती क्षेत्रों में ले जाए जाते थे। इस प्रकार, उदाहरणार्थ, मेवाड़ के चित्रों का संग्रह बूँदी के राजा के यहाँ या उसी प्रकार से बूँदी के चित्र मेवाड़ के राजा के यहाँ मिल सकते थे।

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण (Reconstructing the History of Paintings)–

चित्रकलाओं के इतिहास का पुनर्निर्माण एक अभूतपूर्व कार्य है। दिनांकित की तुलना में अदिनांकित कलाकृतियाँ कम हैं। अगर इन सभी को क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाए तो इनके बीच कुछ खाली स्थान रह जाते हैं, जहाँ पर किसी के भी द्वारा चित्रण के विकास या गतिविधि का अंदाज लगाया जा सकता है। स्थिति की जटिलता तब अधिक बढ़ जाती है, जब ये बिखरे पृष्ठ अपने मूल भाग का हिस्सा न रहकर विभिन्न संग्रहालयों और निजी संग्रहों में बिखर गए, जो इधर-उधर समय-समय पर देखने को मिलते हैं। ये परिभाषित समय को चुनौती देते हैं और विद्वानों को पुन: कालक्रम में संशोधन करने और उसे पुनर्परिभाषित करने के लिए विवश करते हैं। इस प्रकार अदिनांकित चित्रकलाओं के समूहों को उनकी शैली के आधार पर और अन्य परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता रहा है।

पश्चिमी भारतीय चित्रकला शैली (Western Indian School of Painting)

चित्रकला की जो शैली भारत के पश्चिमी भाग में बड़े रूप में फली-फूली, उसे पश्चिमी भारतीय चित्रकला के नाम से जाना जाता है। इस शैली का प्रमुख केन्द्र गुजरात है, इसमें अन्य केन्द्रों के रूप में राजस्थान का दक्षिणी भाग और मध्य भारत का पश्चिमी भाग भी सम्मिलित है। गुजरात में अनेक प्रमुख बन्दरगाहों के होने के कारण इस क्षेत्र से गुजरने वाले व्यावसायिक मार्गों का एक जाल है जिसमें वहाँ के स्थानीय सामन्त, सौदागर और व्यापारी व्यापार से अर्जित अपनी धन-सम्पदा और समृद्धि के कारण कला के सशक्त संरक्षक बन गये थे।

जैन चित्रकला–मुख्य रूप से जैन-समुदाय के व्यापारी वर्ग ने जैन धर्म के विषयों को संरक्षित किया। जैन विषयों और पांडुलिपियों पर आधारित पश्चिम भारतीय शैली का यह भाग जैन चित्रकला के नाम से जाना जाता है।

जैन चित्रों को शास्त्र दान की परंपरा से जैन शैली के विकास को और प्रोत्साहन मिला क्योंकि इस समुदाय में प्रचलित शास्त्रदान (पुस्तकों को दान देना) की अवधारणा ने इसका समर्थन किया, जहाँ सचित्र पांडुलिपि को मठों की लाइब्रेरी, जिसे भण्डार कहा जाता था, में दान देने के कार्य को एक परोपकार, सदाचार और धार्मिक कृत्य के भाव के रूप में महिमामंडित किया जाता था।

जैन परम्परा के निम्नलिखित प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनमें जैन शैली के चित्र चित्रित किये गये हैं–

(1) कल्पसूत्र (Kalpasutra)–जैन परम्परा में कल्पसूत्र को सर्वाधिक लोकप्रिय चित्र-ग्रंथ माना गया है। इसके एक भाग में 24 तीर्थंकरों के जन्म से लेकर निर्वाण तक की विविध घटनाओं को गाते हुए बताया गया है। जो कि कलाकारों को उनके जीवन चरित्र को चित्रित करने हेतु सामग्री उपलब्ध करता है। कल्पसूत्र के अधिकांश भाग में तीर्थंकरों के जीवन और उनके द्वारा नेतृत्व की गई व उनके इर्द-गिर्द घटी पाँच प्रमुख घटनाओं को विस्तृत रूप में बताया गया है, वे हैं–गर्भाधान, जन्म, गृहत्याग, ज्ञान प्राप्ति व प्रथम उपदेश और महानिर्वाण।

(2) कालकाचार्यकथा (Kalakacharyakatha)–अन्य दूसरे लोकप्रिय चित्रित-ग्रन्थों में प्रमुख हैं– कालकाचार्यकथा और संग्राहिणी सूत्र। कालकाचार्यकथा में आचार्य कालक की कथा का वर्णन है। जिसमें कालक अपनी अपहृत बहन जो कि एक जैन साध्वी है, को एक दुष्ट राजा से बचाने के अभियान पर हैं। यह कालक की